काव्य लहरी

पाठ्य-पुस्तक

बी.सी.ए/बी.एससी (फ्येड) तथा एस.ई.पी अधीन सभी कोर्स
B.C.A/B.Sc. (FAD) & BCA COURSES UNDER SEP

द्वितीय सेमिस्टर / II SEMESTER

Text for BCA/ B.Sc., FAD

संपादक

डॉ. सुलोचना एच.इ

डॉ. शैलजा

प्रकाशक

प्रसारांग

बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय

बेंगलूरु-560 001

KAVYA LAHARI

Edited by :
Dr. Sulochana H.I.
Dr. Shylaja

© बेंगलूर नगर विश्वविद्यालय

प्रथम संस्करण 2024

Pages -39

प्रधान संपादक

प्रो. शेखर

मूल्य :

प्रकाशक

प्रसारांग

बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय

बेंगलूरु-560 001

भूमिका

बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय में 2024-25 शैक्षिक वर्ष से एसईपी-2024 पद्धति के अनुसार स्नातक वर्गों के लिए नया पाठ्यक्रम जारी किया जा रहा है।

इस पाठ्यक्रम की संरचना ऐसी की गई है कि इसके अध्ययन के पश्चात हिंदी साहित्य के विद्यार्थी यह जान सके कि साहित्य का विषय विश्लेषण और सराहना कैसे की जाए और दिए गए विषय को पढ़ने की समझ किस प्रकार विकसित की जाए, ताकि विद्यार्थी भाषा और साहित्य के उद्देश्य से भली-भांति परिचित हो सके। जैसे विज्ञान और आदि विषयों के अध्ययन के साथ यह भी अधिक उपयोगी है। एस.ई.पी सेमेस्टर (सीबीसीएस) पद्धति के अनुसार यह पाठ्यक्रम निर्माण किया गया है।

इस पृष्ठभूमि में हिंदी अध्ययन मंडल ने विभाग अध्यक्ष प्रो. शेखर के मार्गदर्शन में पाठ्य पुस्तक का निर्माण किया है।

विश्वास है कि यह कविता संकलन छात्र समुदाय के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। विश्वविद्यालय की यह शुभेच्छा है कि साहित्य और समाजशास्त्री विषयों के लिए भी अधिक उपयोगी और प्रासंगिक लगे। इस पाठ्य पुस्तक के निर्माण में योग देने वाले सभी के प्रति विश्वविद्यालय आभारी है।

प्रो.लिंगराज गांधी
कुलपति
बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय
बेंगलूरु 560 001

प्रधान संपादक की कलम से.....

बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय शैक्षिक क्षेत्र में नए-नए विषयों को अपने अध्ययन की सीमा में ले रहा है। अध्ययन को एसईपी-2024 नीति के अनुसार प्रस्तुति करने का प्रयत्न हो रहा है। साहित्यिक विषयों को आज की बदलती परिस्थिति के अनुसार रखने के उद्देश्य से पाठ्यक्रम को प्रस्तुत किया जा रहा है।

एसईपी सेमेस्टर पद्धति के अनुसार स्नातक वर्गों के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण किया जा रहा है। इस पाठ्य पुस्तक के निर्माण में योग देने वाले संपादकों के प्रति मैं आभारी हूँ।

इस नई पाठ्य पुस्तक के निर्माण में कुलपति महोदय प्रो. लिंगराज गांधी जी ने अत्यधिक प्रोत्साहन दिया तदर्थ मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ।

इस पाठ्यक्रम को राज्य शिक्षा नीति के ध्येयोद्देश्य को ध्यान में रखते हुए किया गया है। कविता के विविध आयामों को इस पाठ्य-पुस्तक में शामिल किए गए हैं। आशा है कि सभी विद्यार्थीगण इससे अवश्य लाभान्वित होंगे।

प्रो. शेखर

अध्यक्ष (बी.ओ.एस)

बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय

बेंगलूरु-560 001

अनुक्रमणिका

क्र.सं				पृष्ठ संख्या
1.	कबीरदास के दोहे	-	कबीरदास	6-7
2.	सूरदास के पद	-	सूरदास	8-9
3.	मीराबाई के पद	-	मीराबाई	10-11
4.	भूख	-	हरिवंशराय बच्चन	12-13
5.	बहुत अच्छा लगता है मुझे	-	केदारनाथ अग्रवाल	14-15
6.	विदेह	-	भरत भूषण अग्रवाल	16-17
7.	रावण का पुत्र शोक	-	मैथिली शरण गुप्त	18-21
8.	उनको प्रणाम	-	नागार्जुन	22-23
9.	मिट्टी की महिमा	-	शिवमंगल सिहं 'सुमन'	24-25
	परिशिष्ट :			26-38
	कवि परिचय			

1. कबीर के दोहे

कबीरदास

गुरु गोविंद तो एक है, दूजा यहु आकार ।
आपा मेट जीवित मरै, तो पावै करतार ।।1।।

रामनाम के पटंतरै देबै कौं कछु नाहिं ।
क्या लै गुरु संतोषिए, हाँसी रही मन माँहि ।।2।।

कबीर गुरु गरवा मिल्या रलि गया आटैं लूण।
जाति-पाँति कुल सब मिटै, नाँव धरौगे कौण ।।3।।

कोटि क्रम पलै पलक मैं, जे रंचक आवै नाउँ ।
अनेक जुग जे पुण्य करै, नहीं राम बिन ठाउँ ।।4।।

कबीर निरभै राम जप, जब लगि दीवै बाति ।
तेल घट्या बाती बुझी, सोवैगा दिन राति ।।5।।

कबीर एक न जाँणियाँ, तौ बहु जाँण्याँ क्या होइ।
एक तैं सब होत है, सब तै एक न होई ।।6।।

धरती गगन पवन नहीं होता, नहीं तोया, नहीं ताय ।
तब हरि हरि के जन होते, कहै कबीर बिचाय ।।7।।

कागद केरी नाँव री, पाणीं केरी गंग ।
कहै कबीर कैसे तिरूँ, पंच कुसंगी संग ।।8।।

कबीर सूता क्या करै, सूताँ होइ अकाज ।
ब्रह्म का आसण खिस्या, सुणत काल की गाज ।।9।।

ऊँचे कुल का जनमियाँ, जे करणीं ऊँच न होइ।
सुवरन कलस सुरै भर्‌या साधु निंध्या सोइ ।।10।।

2. सूरदास के पद

सूरदास

अवगत-गति कछु कहत न आवै।
ज्यों गूँगे मीठे फल कौ रस, अंतरगत ही भावै ।
परम स्वाद सबही सु निरंतर, अमित तोष उपजावै ।
मन-बानी कौं अगम-अगोचर, सो जाने जो पावै ।
रूप-रेख-गुन-जाति जुगति-बिनु, निरालंब कित धावै
सब बिधि अगम बिचारहिं तातै, सूर सगुन-पद गावें ।।1॥

अब मैं नाच्यौ बहुत गुपाल ।
काम-क्रोध कौ पहिरि चोलना, कंठ विषय की माल ।
महामोह के नूपुर बाजत, निंदा-सबद रखाल ।
भ्रम-भोयौ मन भयौ पखावज, चलत असंगत चाल ।
तृष्ना नाद करति घट भीतर, नाना विधि दै ताल ।
माया को कटि फेटा बाँध्यौ, लोभ-तिलक दियौ भाल ।
कोटिक कला काछि दिखराई, जल-थल सुधि नहिंकाल ।
सूरदास की सबै अविद्या, दूरि करौ नंदलाल ॥2॥

कपट करि ब्रजहिं पूतना आई ।
अति सुन्दर, विष अस्तान लाया, राजा कंस ने भेजा।
मुख चूमति अरु नैन निहारति, राखति कंठ लगाई।
भाग बड़े तुम्हरे नन्दरानी, जिहिं के कुँवर कन्हाई ।
कर गहि छीर पियावति अपनी, जानत केसवराई ।
बाहर है कै असुर पुकारी, अब बलि लेहु छुड़ाई ।
गइ मुरछाइ, परी धरनी पर, मनौ भुवंगम खाई।
सूरदास प्रभु तुम्हरी लीला, भक्तनि गाइ सुनाई ॥3॥

सोभित कर नवनीत लिए ।
घुटुरुनि चलत रेनु तन मंडित, मुख दधि लेप किए।
चारु कपोल, लोल लोचन, गोरोचन-तिलक दिए।
लट-लटकनि मनु मत्त मधुप-गन मादक मधुहिं पिए।
कठुला-कंठ, बज्र केहरि-नख, राजत रुचिर हिए।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख, का सत कल्प जिए। ॥4॥

3. मीराबाई के पद

मीराबाई

मन रे परसि हरि रे चरण ।
सुभग सीतल कँवल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरण ।
जिण चरण प्रहलाद परसे, इन्द्र पदवी धरण
जिण चरण ध्रुव अटल किन्हें, राख अपनी सरण ।
जिण चरण ब्रह्मांड भेटयो नखसिखां सिरी धरण
जिण चरण प्रभु परसि लीने, तरी गोतम-धरण ।
जिण चरण कालीनाग नाथ्या, गोप लीला-करण ।
जिण चरण गोबरधन धारया, गरब मधवा हरण ।
दासि मीरा लाल गिरधर, अगम तारण तरण ॥1॥

हरि बिन कूण गति मेरी।
तुम मेरे प्रतिकूल कहिए मैं रावरी चेरी॥
आदि अंत निज नाँव तेरो हीया में फेरी।
बेरी-बेरी पुकारि कहूँ प्रभु आरति है तेरी॥
यौ संसार विकार सागर-बीच में घेरी।
नाव फाटी प्रभु पालि बाँधो बूड़त है बेरी॥
विरहणि पिव की बाट जोवै राखि ल्यौ नेरी।
दासि मीरा राम रटन है मैं सरण हूँ तेरी ॥2॥

साँवरों नंदनंदन, दीठ पड़याँ माई ।
डारयाँ सब लोक-लाज सुध-बुध बिसराई ।
मोर चन्द्रका किरीट मुगट छब सोहाई ।
केसर रो तिलक भाल, लोचन सुखदाई ।
कुंडल झलकाँ कपोल अलकाँ लहराई ।
मीणा तज सरोवर ज्यों मकर मिलन धाई।
नटवर प्रभु भेष धरयाँ रूप जग लोभाई ।
गिरधर प्रभु अंग अंग, मीराँ बलि जाई ॥3॥

मैं तो गिरधर के घर जाऊँ ।
गिरधर म्हाँरो साँचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ
रैण पडै तब ही उठि जाऊँ, भोर गये उठि आऊँ ।
रैणदिना बाके संग खेलूँ, ज्यूँ त्यूँ ताहि रिझाऊँ ।
जो पहिरावै सोई पहिरूँ, जो दे सोई खाऊँ ।
मेरी उनकी प्रीत पुराणी, उण बिन पल न रहाऊँ।
जहाँ बैठावें तितही बैठूं, बेचै तो बिक जाऊँ ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, बार-बार बलि जाऊँ ॥4॥

4. भूख

डॉ. हरिवंशराय बच्चन

बीत गए दस बरस देश के,
पड़ा काल बंगाल भूमि पर
और पढ़ पत्रों में मैंने
कैसे भूखों के दल के दल
पहना-गुरिया, बर्तन-भाँड़ा
गैया-गोरु, बैल-बछेरु,
बोरी-बंधना, कपड़ा-लत्ता,
जर-जमीन सब बेच-बाचकर,
पुश्तैनी घर-बार छोड़कर
चले आ रहे हैं कलकत्ता !
कैसे भूखों के दल के दल
दर-दर मारे-मारे फिरते,
दाने-दाने को बिललाते
ग्रास-ग्रास के लिए तरसते,
कौर-कौर के लिए तड़पते
मौत मर रहे है कुत्तों की
अरे नहीं,
कुत्ता भी मरता नहीं इस तरह
मौत मर रहे हैं कीड़ों की,
या इससे भी निम्न कोटि की !
(उफ़, मनुष्य के महापतन की बनी न सीमा!)
और सुना जब मैंने यह भी
भूखे देखे गए छीनकर,
बच्चे से निज रोटी खाते,
या कि बेचते उनको हाटों
में कुछ ताँबें के टुकड़ों पर,

जिससे दो दिन और जिएँ वे
पशु का जीवन,
और फिरें फिर
घूरों पर, कूडेखानों पर,
और अधिक गन्दी जगहों पर
उठा दाँत से लेने को यदि
कोई दाना वहाँ पड़ा हो-
मानवता को निन्दित करते,
लज्जित करते,
मानव को मानव संकेत से
वंचित करते-
तब मैंने यह कहा कि हमने
अर्थ भूख का अभी न जाना,
हमें भूख का अर्थ बताना,
भूखो इसको आज समझ लो,
मरने का यह नहीं बहाना !
फिर से जीवत,
फिर से जाग्रत,
फिर से उन्नत,
होने को है भूख निमंत्रण
है आवाहन !

5. बहुत अच्छा लगता है मुझे

केदारनाथ अग्रवाल

जमीन पर जान डालता-
शेर की तरह दौड़ता,
सुबह का समर्थ उजाला;
कूच कर गया है जिसे देखकर
अन्धकार का जंगली रिसाला ।
बहुत अच्छा लगता है मुझे ।

पहाड़ पर फूट-फूट पड़ना
आसमान के बाग के लाल-लाल पक्के अनारों का,
शिलाओं का सिर से पैर तक-
फूल-फूल कर
कचनार-कचनार हो जाना ।
बहुत अच्छा लगता है मुझे ।

नदी का अपने ही पानी में तरंगित झूलना,
खगोल की रंगशाला के
नाटकीय मुद्राओं के सौन्दर्य का वरण करना ।
बहुत अच्छा लगता हा मुझे ।

हवा के सुर बहार का
बारम्बर बजना,
सदारंग संसार का भावातिरेक से संस्पर्श करना ।
बहुत अच्छा लगता है मुझे ।

पेड़-पेड़ की गोद में दुधमुँहे फूलों का
कुलेल करते-करते कुलकना,
ओठ और आँख खोले
रंगीन नैसर्गिक हँसी हँसना ।
बहुत अच्छा लगता है मुझे ।

घोसलों से निकल आयीं चिड़ियों का
गान की उड़ान से आसमान में उड़ना,
चाव से चोंच खोले, हर्ष से चहकना ।
बहुत अच्छा लगता है मुझे ।

जमीन-आसमान की सैर करना,
लोक और आलोक के सौन्दर्य से प्रदीपित रहना,
जिंदगी को जी-जान से प्यार करना,
भूगोल और खगोल का संघात सहना।
बहुत अच्छा लगता है मुझे ।

6. विदेह

भरत भूषण अग्रवाल

आज जब घर पहुँचा शाम को
तो बड़ी अजीब घटना हुई
मेरी ओर किसी ने भी
कोई ध्यान ही न दिया
चाय को न पूछा आ के पत्नी ने
बच्चे भी दूसरे ही कमरे में बैठे रहे
नौकर भी बड़े ढीठ ढंग से झाड़ू लगाता रहा
मानो मैं हूँ ही नहीं -
तो क्या मैं हूँ ही नहीं ?

और तब विस्मय के साथ यह बोध मन में जगा
अरे, मेरी देह आज कहाँ है ?
रेडियो चलाने का हुआ - हाथ गायब है
बोलने को हुआ - मुँह लुप्त है
देखता हूँ परन्तु हाय ! आँखों का पता नहीं
सोचता हूँ-पर सिर शायद नदारद है
तो फिर-तो फिर मैं भला घर कैसे आया हूँ ?

और तब धीरे-धीरे ज्ञान हुआ
भूल से मैं सिर छोड़ आया हूँ दफ्तर में,
हाथ बस में ही टँगे रह गए
आँखें ज़रूर फ़ाइलों में ही उलझ गईं मुँह टेलीफ़ोन से ही चिपटा-सटा होगा
और पैर, हो न हो, क्यू में रह गये हैं-
तभी तो मैं आज घर आया हूँ विदेह ही!

देहहीन जीवन की कल्पना तो
भारतीय संस्कृति का सार है
पर क्या उसमें यह थकान भी शामिल है
जो मुझ अंगहीन को दबोचे ही जाती है?

7. रावण का पुत्रशोक

मैथिली शरण गुप्त

बैठा कनकासन पै वीर दशानन है,
सोहता है हेमकूट - हेम शिर पर ज्यों
श्रृंगवर तेजः पुंज।

चारों ओर बैठे हैं
सौ-सौ पात्र मित्र, सभासद नत भाव से,
विश्व में विचित्र सभा स्फटिक गठित हैं;
उसमें जड़े हैं रत्न, मानो मानसर में
सरस सरोज-फूल चारों ओर फूले हैं।

श्वेत, हरे, लाल, पीले, नीले, स्तम्भ पंक्ति से
ऊँची सुनहरी छत सिर पर रक्खें हैं,
उच्थित अयुत फन फैलाकर अपने
धारण, किये हैं धरा सादर फणीन्द्र ज्यों।

मोती, लाल, पन्ने और हीरे अनमोल-से
झलमल झालरों में झूम झूमते हैं यों -
झूला करते हैं ज्यों महोत्सव - भवन में
पल्लवों के हार गुँथे कलियों से, फूलों से ।

जागती है बार-बार, जगमग भाव से,
क्षोणी में क्षणप्रभा - सी रत्नसम्भवा विभा
चक्षु चौंधियाती हुई ! चारुमुखी चेरियाँ
करके मृणाल-भुज संचालित सुख से
रत्न-दण्डवाले चारु चामर डुलाती हैं।

धारण किये हैं छत्र छत्रधर यों अहा,
जलकर काम हर - कोपानल में न ज्यों
छत्रधर- रूप में खड़ा है सभा-सौध में !
भीममूर्ति द्वारपालक द्वार पै है घूमता
शूल लिये, पाण्डव - शिविर - द्वारा पर ज्यों
रुद्रेश्वर ! गन्धवह बहता सु-मन्द है
अक्षय अनन्त वायु विश्रुत वसन्त का।

काकली तरंग संग लाके अहा ! रंग से
बाँसुरी - सुधा - तरंग मानो व्रज-वन में ।
दैत्यराजमय, क्या तुम्हारी सभा ? तुच्छ है
इसके समक्ष, स्वच्छ रत्नमयी, जिसको
तुमने रचा था इन्द्रप्रस्थ में प्रयास से
पाण्डवों को तुष्ट करने के लिए आप ही।

ऐसी सभा - मध्य बैठा रक्षः कुलराज है,
मौन सुत - शोक-वश, बहती है आँखों से
अविरल अश्रुधारा - वस्त्र भिगोकरके,
तीक्ष्ण शर लगने सरस शरीर में
रोता तरु नीख है जैसे । कर जोड़के
सामने खड़ा है भग्न दूत, भरा धूल से;
शोणित से आर्द्र है शरीर सब उसका ।

शत-शत योद्धा जो कि वीरबाहु - संग ही।
पैठे समराब्धि में थे, शेष बचा सबमें
एक यही वीर; उस काल की तरंग ने
सबको डूबोया इसी राक्षस को छोड़के,
नाम मकराक्ष, यक्षराज सम है बली।

सुत का निधन सुन हाय! इसी दूत से,
आज महा शोकाकुल राजकुल-रत्न है
रावण ! सभाजन दुखी हैं राज- दुख से ।

घन जब घेरता है भानु को, भुवन में
होता है अंधेरा। चेत पाके कुछ देर में
दीर्घ श्वास छोड़ वह शोक सह बोला यों -

"शर्वरी के स्वप्न के समान तेरा कहना
है रे दूत, आकुल है देव - कुल जिसके
भीम भूज विक्रम से, दिन नर राम ने
मारा उसे सम्मुख समर में ? क्या विधि ने
छेंकुर का वृक्ष छेद डाला फूल - दल से ?
हा सुत, हा वीरबाहू, शूरशिरोरत्न हा !

खोया है तुम - सा धन मैंने किस पाप से ?
दारुण रे दैव, दोष देख मेरा कौन-सा
तूने यह रत्न हरा ? हाय! यह यातना
कैसे सहूँ ? और कौन मान अब रक्खेगा
काल - रण-मध्य इस सुविपुल कुल का ?

काटकर कानन में एक - एक शाखा को,
अन्त में लकड़हारा काटता है वृक्ष को;
हे विधाता, मेरा महा वैरी यह वैसे ही
करता है देख बलहीन मुझे नित्य ही !

सत्वर निर्मूल मैं समूलं हूँगा इसके
शायकों से ! अन्यथा क्या मरता समर में
भाई कुम्भकर्ण मेरा, शूलधर - शम्भू-सा

एक मेरे दाष से अकाल में, तथा सभी
रक्षोवंशरक्षी वीर ? शूर्पणखा ! तूने हा,
पंचवटी में जा किस कुक्षण में देखा था,
कालकूट धारी यह नाग, ओ अभागिनी ?

और किस कुक्षण में, तेरे दुख से दुखी,
लाया था कृशानु - शिखारूपी जानकी को मैं
स्वर्ण के सुगेह में ? हाँ ! इच्छा यही होती है
छोड़ यह हेमधाम, निबिड़ अरण्य में
जाकर जुड़ाऊँ निज ज्वाला में अकेले में !

पुष्प- दाम सज्जित, प्रदीपों के प्रकाश से
उद्भासित नाट्यशाला - सी थी यह सुन्दरी
हेमपुरी मेरी ! अब एक-एक करके
सूखते हैं फूल और बुझते प्रदीप हैं;
नीरव रबाब, वीणा, मुरली, मृदंग हैं;
फिर क्यों रहूँ मैं यहाँ शोक मात्र पाने को,
किसकी निवास - वासना है अन्धकार में ?"

8. उनको प्रणाम

नागार्जुन

जो नहीं हो सके पूर्ण-काम
मैं उनकी करता हूँ प्रणाम।

कुछ कुंठित औ' कुछ लक्ष्य-भ्रष्ट
जिनके अभिमन्त्रित तीर हुए;
रण की समाप्ति के पहले ही
जो वीर रिक्त तूणीर हुए !
- उनको प्रणाम।

जो छोटी-सी नैया लेकर
उतरे करने को उदधि-पार;
मन की मन में ही रही, स्वयं
हो गये उसी में निराकार !
- उनको प्रणाम।

जो उच्च शिखर की ओर बढ़े
रह-रह नव-नव उत्साह भरे;
पर कुछ ने ले ली हिम-समाधि
कुछ असफल ही नीचे उतरे !
- उनको प्रणाम।

एकाकी और अकिंचन हो
जो भू-परिक्रमा को जिकले;
हो गए पंगु, प्रति-पद
इतने अदृष्ट के दाव चले !
- उनको प्रणाम।

कृत-कृत्य नहीं जो हो पाए;
प्रत्युत फाँसी पर गए झूल
कुछ ही दिन बीते हैं, फिर भी
यह दुनिया जिनको गई भूल !
- उनको प्रणाम।

थी उग्र साधना, पर जिनका
जीवन नाटक दुखान्त हुआ;
था जन्म-काल में सिंह लग्न
पर कुसमय ही देहान्त हुआ !
- उनको प्रणाम।

दृढ़ व्रत औ' दुर्दम साहस के
जो उदाहरण थे मूर्ति-मन्त;
पर निरवधि बन्दी जीवन ने
जिनकी धुन का कर दिया अन्त !
- उनको प्रणाम।

जिनकी सेवाएँ अतुलनीय
पर विज्ञापन से रहे दूर
प्रतिकूल परिस्थिति ने जिनके
कर दिए मनोरथ चूर-चूर !
- उनको प्रणाम।

9. मिट्टी की महिमा

शिवमंगल सिहं 'सुमन'

निर्मम कुम्हार की थापी से
कितने रूपों में कुटी-पिटी,
हर बार बिखेरी गई, किंतु
मिट्टी फिर भी तो नहीं मिटी !

आशा में निश्छल पल जाए, छलना में पड़ कर छल जाए
सूरज दमके तो तप जाए, रजनी ठुमकी तो ढल जाए,
यों तो बच्चों की गुडिया सी, भोली मिट्टी की हस्ती क्या
आँधी आये तो उड़ जाए, पानी बरसे तो गल जाए!

फसलें उगतीं, फसलें कटती लेकिन धरती चिर उर्वर है
सौ बार बने सौ बर मिटे लेकिन धरती अविनश्वर है।
मिट्टी गल जाती पर उसका विश्वास अमर हो जाता है।

विरचे शिव, विष्णु विरंचि विपुल
अगणित ब्रम्हाण्ड हिलाए हैं।
पलने में प्रलय झुलाया है
गोदी में कल्प खिलाए हैं !

रो दे तो पतझर आ जाए, हँस दे तो मधुरितु छा जाए
झूमे तो नंदन झूम उठे, थिरके तो तांड़व शरमाए
यों मदिरालय के प्याले सी मिट्टी की मोहक मस्ती क्या
अधरों को छू कर सकुचाए, ठोकर लग जाये छहराए !

उनचास मेघ, उनचास पवन, अंबर अवनि कर देते सम
वर्षा थमती, आँधी रुकती, मिट्टी हँसती रहती हरदम,
कोयल उड़ जाती पर उसका निश्वास अमर हो जाता है
मिट्टी गल जाती पर उसका विश्वास अमर हो जाता है !

मिट्टी की महिमा मिटने में
मिट मिट हर बार सँवरती है
मिट्टी मिट्टी पर मिटती है
मिट्टी मिट्टी को रचती है

मिट्टी में स्वर है, संयम है, होनी-अनहोनी कह जाए
हँसकर हालाहल पी जाए, छाती पर सब कुछ सह जाए,
यों तो ताशों के महलों सी मिट्टी की वैभव बस्ती क्या
भूकम्प उठे तो ढह जाए, बूड़ा आ जाए, बह जाए!

लेकिन मानव का फूल खिला, अब से आ कर वाणी का वर
विधि का विधान लुट गया स्वर्ग अपवर्ग हो गए निछावर,
कवि मिट जाता लेकिन उसका उच्छवास अमर हो जाता है
मिट्टी गल जाती पर उसका विश्वास अमर हो जाता है।

परिशिष्ट :

कवि परिचय

1. कबीरदास

कबीरदास के पिताजी का नाम नीरू तथा माता का नाम नीमा था । जाति के वे जुलाहा थे। अपने इस व्यवसाय को वे इतनी अधिक प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखते थे कि मृत्युपर्यंत इसीके द्वारा अपनी आजीविका चलाते रहे। जाति-पाँति की दीवार को तोड़कर सबको अपनी भक्ति-परंपरा में सम्मिलित करनेवाले स्वामी रामानंद के वे शिष्य थे ।

उनकी समस्त कृतियाँ तीन भागों में विभक्त हैं - साखी पदावली (सबद) और रमनी। 'साखी' में दोहे और कहीं-कहीं एकाध सोरठे भी हैं जिनमें अनेक उपदेशप्रद बातें कही गयी हैं। 'पदावली' में बाह्याडंबरों के प्रति तीव्र आक्रोश व्यक्त किया है तथा ब्रह्म, जीव और माया के रहस्यात्मक वर्णन के साथ भगवत्-प्रेम की पराकाष्ठा दिखायी है। 'रमैनी' में हम उनके सिद्धांत का विशिष्ट रूप पाते हैं । इसमें साखी और पदावली में प्रयुक्त विषयों के सिवाय उपदेश, गुरु और राम-संबंधी भजन तथा योग, सत्संग और कर्तानिर्णय तथा कर्ता के स्वरूप-संबंधी अनेक पद हैं ।

उनके काव्य में हृदयपक्ष की प्रधानता है। काव्य-कला की दृष्टि से देखने पर उनके पद्य काव्य की कसौटी पर खरे नहीं उत्तरते । यहाँ तक कि अनेक दोहे पिंगल के नियमों के प्रतिकूल हैं, पदों का भी यही हाल है। पर भाव, रस, प्रेम और भक्ति की दृष्टि से उनकी कृतियाँ अनुपम हैं। हिंदी साहित्य में व्यंग्यात्मक शैली के सर्वप्रथम आविष्कर्त्ता वे ही हैं। उनकी रचनाओं में 'बीजक' मुख्य है।

शब्दार्थ

1. आपा = जीवन मृत की अवस्था अर्थात् साधना की ऐसी जीवत मरै = सिद्धावस्था जहाँ इन्द्रियों का सांसारिक आकर्षण समाप्त होता है।
2. पटंतरै = समान वस्तु । हौंस = दुविधा, अड़चन ।
3. गरवा = गौरवशाली। रलि गया = एकाकार हो गया। लूण = नमक धरौगे रखोगे।
4. क्रम = कर्म । पेलै = नष्ट कर देना। पलक क्षण मर में। रंचक = थोड़ा। नाउँ = नाम। पुन्नि = पुण्य। ठाँउ = स्थान।
5. निरभै = निर्भय, निडर। जपि = जपो । जब लगि = जब तक । दीवै = शरीर में। बाति (प्रतीकार्थ) प्राण रूपी बत्ती। तेल = सामर्थ्य, शक्ति
6. जॉण्याँ = जानने से ।
7. गगन = आसमान । तोया = ज्योति। हरि = भगवान। हरि के जन जल। तारा = नक्षत्र, भक्त
8. गंग = भवसागर रूपी गंगा। पंच कुसंगी = काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह आदि पाँच विकार
9. अकाज = अहित । सूता = सोने से । खिस्या = खिसका। गाज = गर्जना।
10. करणीं = कर्म । सुवरन कलस = सोने का कलश। सुरै = सुरा (शराब)

2. सूरदास

सूरदास का जन्म 'रुनकता' नामक ग्राम में 1478 ई. में पण्डित रामदास जी के घर हुआ था। पण्डित रामदास सारस्वत ब्राह्मण थे। कुछ विद्वान् 'सीही' नामक स्थान को सूरदास का जन्म स्थल मानते हैं। सूरदास जन्म से अन्धे थे या नहीं, इस सम्बन्ध में भी विद्वानों में मतभेद हैं। वे हिन्दी भक्त कवियों में शिरोमणि माने जाते हैं।

सूरदास जी एक बार वल्लभाचार्य जी के दर्शन के लिए मथुरा के गऊघाट आए और उन्हें स्वरचित एक पद गाकर सुनाया, वल्लभाचार्य ने तभी उन्हें अपना शिष्य बना लिया। वल्लभाचार्य ने उन्हें श्रीनाथ मन्दिर का कीर्तन भार सौंप दिया, तभी से वह मन्दिर उनका निवास स्थान बन गया। सूरदास जी विवाहित थे तथा विरक्त होने से पहले वे अपने परिवार के साथ ही रहते थे।

वल्लभाचार्य जी के सम्पर्क में आने से पहले सूरदास जी दीनता के पद गाया करते थे तथा बाद में अपने गुरु के कहने पर कृष्णलीला का गान करने लगे। सूरदास जी की मृत्यु 1583 ई. में गोवर्धन के पास 'पारसौली' नामक ग्राम में हुई थी।साहित्यिक परिचय- सूरदास जी महान् काव्यात्मक प्रतिभा से सम्पन्न कवि थे। कृष्णभक्ति को ही इन्होंने काव्य का मुख्य विषय बनाया। इन्होंने श्रीकृष्ण के सगुण रूप के प्रति सखा भाव की भक्ति का निरूपण किया है। इन्होंने मानव हृदय की कोमल भावनाओं का प्रभावपूर्ण चित्रण किया है। अपने काव्य में भावात्मक पक्ष और कलात्मक पक्ष दोनों पर इन्होंने अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी है।

कृतियाँ-

सूरदास जी ने लगभग सवा लाख पदों की रचना की थी, जिनमें से केवल आठ से दस हजार पद ही प्राप्त हो पाए हैं। 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' के पुस्तकालय में ये रचनाएँ सुरक्षित हैं। पुस्तकालय में सुरक्षित रचनाओं के आधार पर सूरदास जी के ग्रन्थों की संख्या 25 मानी जाती है, किन्तु इनके तीन ग्रन्थ ही उपलब्ध हुए हैं। सूरसागर

(2) शब्दार्थ

(1) अविगत-गति = अव्यक्त अर्थात निराकार या निराकार का स्वरूप; संतुष्टि, आनंद; रूप-रेख-गुण जाति-जुगति = रूप, आकृति, गुण, जाति और तर्क से रहित अर्थात अपरिभाष्य।

(2) टीकौ = सिरमौर, लीकौ = लीक या लकीर ।

(3) भुवंगम = साँप । असुर -राक्षस, नैन - आँख

(4) कठुला = गले में पहने जाने वाला आभूषण; हँसुली; वज्र केहरि नख = सिंह का नाखून सोने में मढ़कर गले में पहनाया हुआ ।

3. मीराबाई

मीराबाई का जन्म मेड़ता (राजस्थान) में हुआ था। वह रत्नसिंह की पुत्री और राव दूदाजी की पौत्री थी । उनका विवाह उदयपुर के महाराणा भोजराज के साथ हुआ था, जो विवाह के कुछ समय बाद ही अचानक काल-कवलित हो गये ।

यों तो बचपन से ही नटनागर कृष्ण के प्रति उनकी पूर्ण भक्ति थे । परंतु वैधव्य के वज्रपात ने उनके हृदय में एक तीव्र वेदना उत्पन्न की, जिसके कारण वे भक्ति में विभोर हो स्वयं गिरिधरमय हो गयीं । कृष्ण के प्रति इस तल्लीनता को देखकर उनके बंधुजनों ने उन्हें बहुत कष्ट पहुँचाया। कहा जाता है कि मार्गदर्शन के लिए उन्होंने गोस्वामी तुलसीदासजी को भी पत्र लिखा था । 'जाके प्रिय न राम वैदेही, सो नर छाँड़िये कोटि वैरि सम जदपि परम सनेही' उत्तर देकर गोस्वामीजी ने उन्हें भगवद्भक्ति की ओर प्रवृत्त किया । संत रैदास उनके दीक्षागुरु थे ।

मीराबाई हिन्दी की श्रेष्ठ कवयित्री हैं। कृष्णभक्ति शाखा के कवियों में उनका स्थान सूरदास के बाद आता है। विद्यापति, कबीर, सूर और तुलसी आदि भक्त कवियों की तरह उनके पद भी लोगों के कंठहार बने हुए हैं। भाषा से अपरिचित होने पर भी दक्षिणवासी उनके पदों को सुन 'आण्डाल' के पदों की तरह रस का अनुभव करते हैं ।

मीरा के गीत उनकी अन्तरात्मा की पुकार हैं। उनमें हृदय की कसक है, वियोगिनी का आर्त-क्रंदन है, आत्म-निवेदन है और है मार्मिकता तथा कोमलता का अद्भुत मिश्रण ।

मीरा के लिए गिरधर गोपाल ही सर्वस्व है। अतः मीरा अपने प्रभु कृष्ण के नाम का जप करती और गुणगान करती है।

शब्दार्थ

(1) प्रहलाद, ध्रुव, कालीयनाग, गोवर्धनलीलाआदिकेलिएदेखिएकमलनसीम : 'पौराणिकसन्दर्भकोश'।

नोट: मीराकेपदोंमेंराजस्थानीउच्चारणकेप्रभावसे 'न' केस्थानपर 'ण' प्रयोगहुआंहै।ब्रह्माण्डमेट्या = (वामनकेरूप मे) ब्रह्माण्डकोतीनडगं मेंनापलिया; मधवा = इन्द्र।

(2) वजवणता = ब्रजकीगोपियाँ; आणद = आनन्द

(3) मुगट = मुकुट; मीणा = मीन, मछलियाँ।

(4) रैणादिना = रात-दिन, भोर-सबेरा

4. हरिवंशराय बच्चन

हालावाद के सुप्रसिद्ध कवि बच्चन की कविताओं में नेजी अनुभूतियों का प्राचुर्य है । उनकी विशिष्ट रचना मधुशाला में कल्पना और भावुकता के मेल से एक ऐसी हाला तैयार कर लाए जिसके पठन से हर कोई झूम उठा। उमर खैयाम के जीवन दर्शन पर आधारित यह अभिव्यक्ति हालावाद के नाम से प्रसिद्ध हुई । कवि शराब, साकी व प्याले के माध्यम से सामाजिक रूढ़िवादिता, धार्मिक कट्टरता और भौतिकता पर प्रहार करते हैं । कवि का मूल संदेश मानवता की एकता एवं भाईचारे का है, प्रेम और मस्ती इनकी कविताओं की पहचान है । इनकी कृतियों में सामाजिक समस्या, भारत की दुर्दशा, जीवन की विडम्बना एवं विषमता के चित्र उभारे गये हैं । सुकुमारता, लाक्षणिकता, सरलता एवं सहजता इनकी भाषा के विशेष गुण हैं ।

शब्दार्थ :

गुरिया-माला का एक मोती,गैया गोरु-गाय,

बछेरू-बछड़ा,पुष्तैनीं -पूर्वजों से प्राप्त घर,बिल्लाते -विलाप करते, तरसते

कौर-कौर-ग्रास,

महापत्तन-नाश

5. केदारनाथ अग्रवाल

आपका जन्म उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के कमसिन नामक गाँव नें १९११. में हुआ । आपकी आसंभिक शिक्षा रायबरेली और कटनी में हुई । विश्वविद्यालयी शिक्षा आपने इलहाबाद और आगरा विश्वविद्यालयों में प्राप्त की । एल. एल. बी. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद १९३८ ई. में बांदा में आपने वकालक प्रारंभ की । आजीवन आपकी जीविका का यही मुख्या साधन रहा । आपको १९७३ में सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार और १९८३ में 'अपूर्वा' नामक काव्य-संग्रह पर साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। हिंदी साहित्य सम्मेलन ने आपको 'वाचस्पति' की मानद उपाधि प्रदान की ।

शब्दार्थ :

कूच कर गया = चले जाना; शिलाओं - शाखाओं; भावातिरेक = भावपूर्ण; संस्पर्श छूना; कुलकना प्रसन्न होना, नैसर्गिक प्राकृतिक ; प्रदीपित = प्रकाशित; संघात = आघाता ।" कहाँ नहीं पड़ती है किस पर"

6. भरत भूषण अग्रवाल

भारत भूषण अग्रवाल ल का जन्म सन् 1919 ई. में मथुरा में हुआ था। आप नई कविता के प्रतिनिधि कवियों में से हैं। दैनिक जीवन के कटु यथार्थ की व्यंग्यपूर्ण अभिव्यजंना ही आपकी कविताओं की विशेषता है। आपने काव्य के साथ ही नाटक, उपन्यास, निबंध तथा ध्वनिरूपक भी लिखे हैं। 'मुक्तिमागी और 'ओ प्रस्तुत मन' में आपकी श्रेष्ठ रचनाएँ संग्रहीत हैं। इनके अतिरिक्त अन्य संग्रह है- 'अनुपस्थित लोग', 'एक उठा हुआ हाथ', 'और खाई बढ़ती गई', 'कागज के फूल' आदि। आपकी मृत्यु सन् 1975 ई. में हुई।

शब्दार्थ :

अजीब -विचित्र; ढीठ -धृष्टता; बोध -जानकारी; लुप्त- गायब, नदारद -गायब; समा जाना -लीन हो जाना; विदेह बिना शरीर का; शामिल - मिला हुआ; पकड़ना 1 । दबोचना = कसकर

7. मैथिलीशरण गुप्त

राष्ट्रवाद के अमर गायक मैथिली शरण, गुप्त की रचनाओं में सर्वत्र प्रचीनता के प्रति आकर्षण, भारत की संस्कृति से लगाव एवं भारतीय आदर्शों तथा जीवन - मूल्यों के प्रति मोह मिलता है। अपनी रचनाओं में उन्होंने उपेक्षित नारी पात्रों के साथ सहानुभूति दिखाई है यथा - यशोधरा, ऊर्मिला, कैकेयी, विष्णुप्रिया आदि। स्वतंत्रता आन्दोलन की गतिविधियाँ, गौरवपूर्ण व वैभवशाली अतीत के चित्र एवं वर्तमान की दुर्दशा पर क्षोभ, पारिवारिक जीवन का चित्रण, भारतीय मूल्यों की प्रतिष्ठा, लोककल्याण की भावना, इनकी कृतियों में भरे पड़े हैं। राष्ट्रीयतावाद, मानवतावाद एवं गांधीवाद का गायन करने वाले कवि मैथिलीशरण गुप्त की लेखनी सामाजिक क्षेत्र में फैली हुई विषमता एवं जातिवाद का खण्डन करने के लिए हर हमेशा तत्पर रही। इतिवृत्तात्मक शैली से इन्हें लगाव है। खड़ीबोली को सजाने व संवारने में और एक व्यवस्थित रूप देने में इनका योगदान महत्वपूर्ण है।

रचनाएँ :- रंग में भंग, जयद्रथ वध, भारत भारती, पंचवटी, यशोधरा, द्वापर, नहुष, जय-भारत, किसान, साकेत, काबा और कर्बला, विष्णुप्रिया उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं। मेधनाद यध, पलासी का युद्ध और रुबाइ्यात उमर खैयाम अनूदित रचनाएँ हैं।

शब्दार्थ

कनकासन = शयन आसन। दशानन = रावण। हेमकूट- हेम....... श्रृंगवर तेजः पुंज = सोने से बना मुकुट जो रावण के सिर पर शोभायमना है वह ऐसा लगता है मानों हिमालय पर्वत का एक एक भाग हो। हेमकूट = पर्वत विशेषः । हेम = सोना । स्फटिक = एक प्रकार का सफेद पारदर्शी पत्थर, बिल्लौर । मानसर = मानसरोवर । सरोज = कमलं । उत्थित = उन्नत, उठा हुआ। अयुत = दस हजार की संख्या तक । असंख्य फनों

8. नागार्जुन

हिन्दी के प्रतिबद्ध मार्क्सवादी कवियों में नागार्जुन का स्थान शीर्ष पर है। इनका पूरा नाम है-वैद्यनाथ मिश्र । मैथिली बोली में ये 'यात्री' नाम से लिखते हैं।

इनका जन्म दरभंगा जिले (बिहार) के तरौनी ग्राम में हुआ था। हिन्दी और मैथिली के अलावा उन्होंने संस्कृत तथा पालि में भी रचनाएँ लिखी हैं। इन्होंने कुछ समय तक काशी तथा कलकत्ता में संस्कृत का अध्यापन भी किया तथा कुछ दिनों वे बौद्धभिक्षु रहे और श्रीलंका जाकर उन्होंने 'चित्रपिटकाचार्य' की उपाधि भी प्राप्त की। 'पत्रहीन नग्न गाछ' नामक इनकी मैथिली काव्य-कृति पर इन्हें साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला। 'दीपक' और 'विश्वबन्धु' का संपादन भी इन्होंने कुछ समय तक किया।

आपकी रचनाओं में शोषण तथा धार्मिक-सामाजिक कुरीतियों पर मुखर और आक्रामक व्यंग्य-प्रहार मिलता है। हास्य-व्यंग्य द्वारा इन्होंने अपने कृतित्व को नवीन ऊर्जा दी है। सहजता नागार्जुन के काव्य की विशेषता है।

मुख्य रचनाएँ

कविता : युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई आँखें, तुमने कहा था,

भस्मांकुर (खण्ड काव्य) ।

शब्दार्थ

अभिमंत्रित -मन्त्र द्वारा शुद्ध किया हुआ, रण - युद्ध, नैया- नौका, नाव, उदधि-

समुद्र, सागर पंगु - लंगड़ा,

दुर्दम -प्रबल, प्रचंड

(9) शिवमंगल सिंह 'सुमन'

(5 अगस्त 1915 - 27 नवम्बर 2002) हिन्दी के शीर्ष कवियों में थे। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा भी वहीं हुई। ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज से बी.ए. और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम.ए., डी.लिट् की उपाधियाँ प्राप्त कर ग्वालियर, इन्दौर और उज्जैन में उन्होंने अध्यापन कार्य किया। वे विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के कुलपति भी रहे। 1974 में 'मिट्टी की बारात' पर साहित्य अकादमी तथा 1993 में भारत भारती पुरस्कार से सम्मानित। 1974 भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित। उन्हें सन् 1999 में भारत सरकार ने साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया था। 'सुमन' जी का जन्म 5 अगस्त 1915 को ग्राम झगरपुर जिला उन्नाव, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इन्होंने छात्र जीवन से ही काव्य रचना प्रारम्भ कर दी थी और वे लोकप्रिय हो चले थे। उन पर साम्यवाद का प्रभाव है, इसलिए वे वर्गहीन समाज की कामना करते हैं। पूँजीपति शोषण के प्रति उनके मन में तीव्र आक्रोश है। उनमें राष्ट्रीयता और देशप्रेम का स्वर भी मिलता है। प्रमुख कृतियाँ- काव्यसंग्रह: हिल्लोल, जीवन के गान, युग का मोल, प्रलय सृजन, विश्व बदलता ही गया, विध्य हिमालय, मिट्टी की बारात, वाणी की व्यथा, कटे अगूठों की वंदनवारें। आलोचना: महादेवी की काव्य साधना, गीति काव्य: उद्यम और विकास। नाटक: प्रकृति पुरुष कालिदास।

शब्दार्थ

कुटी-झोपड़ी, पर्णशाला, विरंचि-ब्रम्हा, उर्वर-उपजाऊ,फलवन्तता

हालाहल-भारी जहर, विष, विधि-व्यवस्था आदि का ढंग, प्रणाली

Edited by

1. Dr. Sulochana H.I,
H.O.D,
Department of Hindi,
K.L.E.S, S.Nijalingappa College,
2nd Block, Rajajinagar,
Bengaluru – 560 0010.

2. Dr. Shylaja,
H.O.D.,
Department of Hindi,
Ramaiah Institute of Busines Studies,
Gokula, Bengaluru – 560 054.